संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं. १८

सुगम-शब्दरूपावलिः

संस्कृत सीखने का शुभारम्भ करनेवाले बालकों, बालिकाओं तथा प्रौढ़ व्यक्तियों को समस्त व्यवहारोपयोगी संस्कृतशब्दों के रूपों का अल्प समय, अल्प परिश्रम तथा अल्प मूल्य में अधिक ज्ञान करानेके लिए सम्पादित

संस्कृत तथा सनातन संस्कृति के परम पोषक
अमित विभूति, ब्रह्मवेता
श्री देवरहा बाबा संस्कृत प्रचार निधि
सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्, वाराणसी
की
सहायता से प्रकाशित

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्
वाराणसी

आवश्यक निवेदन

इस छोटी-सी पुस्तिका में प्रायः समस्त अधिक व्यवहारोपयोगी अजन्त, हलन्त, सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के रूप दे दिये गये हैं तथा अनेक शब्दों के रूपोंका अर्थ भी लिख दिया गया है। अन्त में समस्त व्यवहारोपयोगी अव्यय भी अर्थ के साथ प्रकाशित कर दिये गये हैं तथा कुछ कारकसम्बन्धी नियम भी। इस पुस्तिका में कारकों, हिन्दी-संस्कृत की विभक्तियों तथा वचनों का निर्देश करते हुए सामने इस प्रकार से शब्दों के रूप दिये गये हैं जिससे एक साथ ही समस्त शब्दों के कारक आदि का ज्ञान हो जाय और किस शब्द के रूप से किस शब्द का रूप कितना भिन्न होता है यह भी ध्यान में आता जाय। इस पुस्तक के द्वारा शब्दरूपों का साधुत्वसम्बन्धी ज्ञान प्रांत करने में भी बहुत सहायता मिल सकती है।

इस पुस्तक के पढ़ने के साथ ही विद्यार्थियों को "सुगम धातुरूपावलि" तथा सरल संस्कृतपद्यसंग्रह इन दो पुस्तकों को भी पढ़ना चाहिए। इन तीनों पुस्तकों की बातों को एक बार अच्छी तरह समझ लेने से तथा तीनों पुस्तकों का कुछ अंश प्रतिदिन पढ़ने से विद्यार्थी, विशेष कर प्रौढ़ शिक्षार्थी, एक दो मास में ही आश्चर्यजनक ज्ञान प्राप्त कर लेंगे और उनको यह विश्वास हो जायेगा कि वे कितनी शीघ्रता और सरलता से संस्कृत के सुयोग्य ज्ञाता हो सकते हैं। संस्कृत सीखने के अभिलाषी सज्जन इन पुस्तकों की एक बार परीक्षा करे यह विनीत अभ्यर्थना है। संस्कृत की अधिक योग्यता प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति संस्थानम् द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकों का अध्ययन करें।

२६ मई २००५ ई०

विनीत निवेदक—
वासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(सम्पादक—संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला)

अक्षरों तथा शब्दों के सम्बन्ध में कुछ अवश्य ज्ञातव्य विषय

वर्ण (अक्षर) भेद

१—स्वर (अच्)

ह्रस्व स्वर—अ	इ	उ	ऋ	ऌ			
दीर्घ स्वर—आ	ई	ऊ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ

अनुस्वार — ं (शंकर)
विसर्ग— : (रामः, कृष्णः)

२—व्यञ्जन (हल्)

क	ख	ग	घ	ङ — कवर्ग = कु		
च	छ	ज	झ	ञ — चवर्ग = चु		
ट	ठ	ड	ढ	ण — टवर्ग = टु		स्पर्श
त	थ	द	ध	न — तवर्ग = तु		
प	फ	ब	भ	म — पवर्ग = पु		
य	र	ल	व —अन्तःस्थ			
श	ष	स	ह —उष्मा (श-तालव्य, ष-मूर्धन्य, स-दन्त्य)			
क्ष	त्र	ज्ञ	संयुक्ताक्षर (क्ष=क्—ष, त्र = त्—र, ज्ञ = ज्—ञ)			

(क्ष त्र ज्ञ संयुक्ताक्षर होने के कारण मूल व्यञ्जनों में नहीं गिने जाते हैं ।)

संस्कृत व्याकरण के अनुसार वर्णमाला के चौदह सूत्र

अइउण् । ऋऌक् । एओङ् । ऐऔच् । हयवरट् । लण् । ञमङणनम् । झभञ् । घढधष् । जबगडदश् । खफछठथचटतव् । कपय् । शषसर् । हल् ।

इन सूत्रों के अन्तिम अक्षरों की गिनती नहीं होती। इन अक्षरों को तथा दो बार आये हुए "ह" अक्षर में से एक को छोड़ देने से ४२ अक्षर बच जाते हैं। संस्कृत व्याकरण शास्त्र में वर्णमाला के इस क्रम का एक विशेष वैज्ञानिक महत्त्व है जिसे छात्रगण संस्कृत व्याकरण पढ़ते समय शिक्षकों से समझ सकेंगे।

शब्द और उनके भेद

१—जो कुछ कान से सुना जाय उसे शब्द कहते हैं।

२ - शब्द दो प्रकार के होते हैं। ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक। जिन शब्दों में अक्षर साफ-साफ न सुनाई दें उन्हें ध्वन्यात्मक कहते हैं। जैसे—बादलों का गड़गड़ाना; घोड़ों का हिनहिनाना इत्यादि। जिन शब्दों में अक्षर साफ-साफ सुनाई दें और लिखे जा सकें उन्हें वर्णात्मक कहते हैं। जैसे—राम, मोहन, सोहन इत्यादि।

३ - स्वरूपभेद से पुनः शब्द दो प्रकार के होते हैं। स्वरान्त एवं व्यञ्जनान्त। जिन शब्दों के अन्त में अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ ये स्वर होते हैं उन्हें अजन्त कहते हैं। जैसे—बालक, विद्या, हरि, नदी, साधु, वधू, पितृ, रै, गो, नौ, इत्यादि। जिन शब्दों के अन्त में क ख ङ लेकर श ष स ह आदि व्यञ्जन हों उन्हें हलन्त कहते हैं जैसे—जगत्, महत्, सम्पद्, वणिज्, यशस् राजन् इत्यादि। संस्कृत में स्वरान्त शब्दों को अजन्त एवं व्यञ्जनान्त शब्दों को हलन्त भी कहते हैं।

४—लिङ्गभेद से शब्द तीन प्रकार के होते हैं। जैसे पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग। किन्हीं-किन्हीं शब्दों के एक से अधिक भी लिङ्ग होते हैं। जैसे—पुस्तकः पुस्तकम् पुस्तकी। लिङ्गों के पहचान के लिए कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है अतः किस शब्द का क्या लिङ्ग है इसका परिज्ञान व्याकरण, कोश तथा व्यवहार से करना चाहिए। एतदर्थ छात्रों को अमरकोश तथा किसी नवीन संस्कृतहिन्दी शब्दकोश को अपने पास अवश्य रखना चाहिए।

५—अर्थ के अनुसार शब्द पाँच प्रकार के होते हैं। जैसे—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय तथा क्रिया। किसी वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं यथा—राम मोहन, हाथी, गंगा, पुस्तक इत्यादि। संज्ञा के बदले आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। सर्वनाम ये है—हम, तुम, यह, वह, जो, कौन, सब इत्यादि। जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं। यथा—चतुर, मूर्ख, छोटा, बड़ा, ऐसा, वैसा, इतना, उतना, पहला, दूसरा इत्यादि। जिन शब्दों में लिङ्ग, वचन एवं विभक्ति के कारण कोई परिवर्तन न हो उन्हें अव्यय कहते हैं। यथा—यहाँ, वहाँ, कहाँ आदि। जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना प्रकट हो उन्हें क्रिया कहते हैं। यथा—आना, जाना, पढ़ना, लिखना इत्यादि। क्रिया के सम्बन्ध में विशेष बातें 'सुगम धातुरूपावलि' में देखें और उन्हें हृदयस्थ कर लें। एक हिन्दी व्याकरण की पुस्तक प्रत्येक संस्कृत छात्र के पास अवश्य होनी चाहिए और उसे अवश्य पढ़ना चाहिये।

आवश्यक सूचना

आगे के पृष्ठों में शब्दरूपों के साथ कारक, हिन्दी-संस्कृत की विभक्तियाँ तथा वचन आदि स्पष्टरूप से लिखित हैं। विद्यार्थी उन्हें ध्यान से देखें तथा अर्थ को ठीक-ठीक समझते हुए शब्दों के रूप कण्ठस्थ करें। साथ ही "ने" प्रथमा विभक्ति का प्रयोग कहाँ होता है और कहाँ नहीं होता इसे भी ठीक-ठीक समझें।

पुस्तक के अन्त में कुछ कारकसम्बन्धी विशेष आवश्यक नियम भी दे दिये गये हैं। छात्रों को उनका भी अच्छी तरह अभ्यास कर लेना चाहिए।

व्यवहारोपयोगी अजन्त एवं हलन्त शब्दों की सूची

पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग अजन्त शब्द

पुंलिङ्ग शब्द

अकारान्त पुं० बालक—इसी प्रकार राम, कृष्ण, छात्र, अध्यापक, पण्डित, शिक्षक, विद्यालय, पाठ, लेख, अभ्यास, समय, अवकाश, सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, पर्वत, मनुष्य, ईश्वर, संसार, विचार इ० । विशेषण शब्द-उत्तम, प्रथम, सुन्दर, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ

इकारान्त पुं० मुनि- ऋषि, हरि, कवि, अग्नि, अतिथि, अंजलि, सारथि, कपि, (बन्दर)

कुछ भिन्न रूपवाले शब्द-पति, सखि इत्यादि

ईकारान्त पुं० सुधी- इसी प्रकार शुद्धधी, मूढधी इ०

कुछ भिन्न रूपवाले शब्द प्रधी, ग्रामणी सेनानी इ०

उकारान्त पुं० साधु—इसी प्रकार गुरु, वायु, पशु, दयालु, शत्रु, भानु, (सूर्य इ०)

ऋकारान्त पुं० दातृ (देनेवाला)— इसी प्रकार वक्तृ (बोलनेवाला) श्रोतृ (सुननेवाला) कर्तृ (करनेवाला), द्रष्टृ (देखनेवाला), ज्ञातृ (जाननेवाला)

कुछ भिन्न रूपवाले शब्द पितृ (पिता), भ्रातृ (भाई)

स्त्रीलिङ्ग शब्द

आकारान्त स्त्री० विद्या—इसी प्रकार पाठशाला, शोभा, लता, शिखा, माला, प्रजा इ०

इकारान्त स्त्री० मति–इसी प्रकार सम्पत्ति,विपत्ति,बुद्धि, शान्ति, नीति,जाति, उन्नति इ०

ईकारान्त स्त्री० नदी—इसी प्रकार लेखनी, मसी, नारी, जननी, मार्जनी इ०

विशेषण शब्द-बुद्धिमती, श्रीमती, विदुषी, गच्छन्ती, ददती, कुर्वती, गतवती इ०

(**कुछ भिन्न रूपवाले शब्द लक्ष्मी, स्त्री, ह्री (लज्जा), भी (डर) इ०**

उकारान्त स्त्री० धेनु (गाय)—इसी प्रकार चञ्चु (चोंच) रज्जु (रस्सी) तनु (शरीर) इ०

ऊकारान्त स्त्री० वधू (स्त्री)-इसी प्रकार श्वश्रू (सास) पुत्रवधू (पतोहू) कण्डू (खुजली)इ०

ऋकारान्त स्त्री० मातृ (माता)—भिन्न रूपवाले शब्द-**स्वसृ (बहन) दुहितृ (लड़की)**

औकारान्त स्त्री०— गो (गाय)

नपुंसकलिङ्ग शब्द

अकारान्त नपुं० ज्ञान—इसी प्रकार अन्न, जल, वस्त्र, फल, मूल, शास्त्र, मित्र, इ०

इकारान्त नपुं० वारि— (पानी) **भिन्न रूपवाले शब्द-दधि, अस्थि, सक्थि, अक्षि इ०**

उकारान्त नपुं० वस्तु—इसी प्रकार मधु, जानु (घुटना) तालु, दारु (लकड़ी) इ०

सूचना—आकारान्त पुं० **विश्वपा** आदि, ऊकारान्त पुं० **प्रतिभू** आदि, ऐकारान्त पुं० रै शब्द, ईकारान्त स्त्री० **लक्ष्मी, श्री** आदि, औकारान्त स्त्री० नौ तथा ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग **कर्तृ** आदि के रूप अन्य पुस्तकों में देखें ।

पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग हलन्त शब्द

पुंलिङ्ग शब्द

जकारान्त पुं० वणिज् (बनिया) – भिषज् (वैद्य)

तकारान्त पुं० मरुत् (हवा)—भूभृत् (राजा, पर्वत) विपश्चित् (विद्वान्)

" " **श्रीमत् बुद्धिमत्**, भगवत्, बलवत्, भाग्यवत् । यावत्–कितना,

" " **महत् (बड़ा)** । तावत्–उतना, कियत्–कितना, इयत्-एतावत्–इतना ।

" " **पठत् (पढ़ता हुआ)** लिखत् (लिखता हुआ) गच्छत् (जाता हुआ)

" " **कुर्वत् (करता हुआ)** पृच्छत् (पूछता हुआ) कथयत् (कहता हुआ)

भिन्न रूपवाले शब्द ददत्, बिभ्रत्, दधत्, जाग्रत् इ०

दकारान्त पुं० सुहृद् (मित्र) सभासद्, कलाविद्, मर्मविद्, संशयच्छिद्, इत्यादि

नकारान्त पुं० गुणिन्, विद्यार्थिन्, मन्त्रिन्, स्वामिन्, धनिन्, तपस्विन्, सदाचारिन् इ०

" " **महिमन् (महत्त्व)** मूर्धन् (शर) कालिमन् (कालिमा) गरिमन् इ०

" " **आत्मन् (आत्मा)** ब्रह्मन् (ब्रह्म) अश्मन् (पत्थर) यज्वन् (यज्ञकर्ता) इ०

भिन्न रूपवाले शब्द पथिन् (रास्ता) राजन् (राजा) श्वन् (कुत्ता) युवन् (युवक) इ०

सकारान्त पुं० वेधस् (ब्रह्मा) चन्द्रमस् (चन्द्रमा) महायशस् (बड़ा यशस्वी) इ०

" " **विद्वस् (विद्वान्)**

" " **गरीयस्** (अधिक बड़ा) लघीयस् (अधिक छोटा) महीयस् (अधिक महान्)इ०

स्त्रीलिङ्ग शब्द

चकारान्त स्त्री० वाच् (वाणी) त्वच् (चमड़ा, छाल) शुच्, ऋच् (ऋग्वेद के मन्त्र) इ०

जकारान्त स्त्री० स्रज् (माला) रुज् (रोग)

तकारान्त स्त्री० सरित् (नदी) विद्युत्, तडित् (बिजली) योषित् (स्त्री०)

दकारान्त स्त्री० आपद् (आपत्ति) सम्पद् (सम्पत्ति) शरद् (शरद् ऋतु) संसद् (सभा) इ०

नकारान्त स्त्री० सीमन्

नपुंसकलिङ्ग शब्द

तकारान्त नपुं० जगत्

नकारान्त नपुं० कर्मन्, नामन्(नाम) धामन्(घर, तेज) रोमन्(रोम) व्योमन्(आकाश) इ०

सकारान्त नपुं० मनस् (मन) पयस् (पानी, दूध) वयस् (उम्र) शिरस् (शिर) यशस् इ०

सूचना—चकारान्त पुं० **जलमुच्** आदि, जकारान्त पुं० **परिव्राज्** आदि, शकारान्त पुं० **विश्**, **तादृश्** आदि, षकारान्त पुं० **द्विष्** आदि, हकारान्त पुं० **मधुलिह्**, **अनडुह्** आदि, धकारान्त स्त्री० **क्षुध्** आदि, पकारान्त स्त्री० **अप्**, भकारान्त स्त्री० **ककुभ्** आदि, रकारान्त स्त्री० **द्वार्** आदि, वकारान्त स्त्री० **दिव्** आदि, सकारान्त स्त्री० **आशिस्** आदि, शकारान्त स्त्री० **दिश्** आदि के रूप अन्य पुस्तकों में देखें ।

सूचना—अजन्त तथा हलन्त सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों की सूची एवं रूप आगे के पृष्ठों में लिखे हुए हैं ।

पुंलिङ्ग अजन्त (स्वरान्त) शब्दों के रूप

सूचना १ – संस्कृत में "सु औ जस्" आदि २१ विभक्तियाँ होती हैं जिनके लगाने से शब्दों के रूपों में परिवर्तन होता है। छात्रों को शब्दरूप कण्ठस्थ करते समय इस बात को भी समझते चलना चाहिए कि इन विभक्तियों के लगाने से किन-किन शब्दों में किस-किस प्रकार के परिवर्तन हो जाते हैं। परन्तु अर्थ में परिवर्तन नहीं होता।

कारक	विभक्ति	बालक शब्द लड़का	अर्थ	मुनि मुनि	पति पति	सखि मित्र	सुधी विद्वान्	साधु साधु	दातृ दाता	पितृ पिता
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१—कर्ता-प्रथमा (ने)	एक० सु–	बालकः	बालक, बालक ने	मुनिः	पतिः	सखा	सुधीः	साधुः	दाता	पिता
	द्वि० औ–	बालकौ	दो बालक, दो बालकों ने	मुनी	पतीं	सखायौ	सुधियौ	साधू	दातारौ	पितरौ
	बहु० जस्–	बालकाः	बहुत बालक, बहुत बालकों ने	मुनयः	पतयः	सखायः	सुधियः	साधवः	दातारः	पितरः
२—कर्म-द्वितीया (को)	ए० अम्–	बालकम्	बालक को	मुनिम्	पतिम्	सखायम्	सुधियम्	साधुम्	दातारम्	पितरम्
	द्वि० औट्–	बालकौ	दो बालकों को	मुनी	पती	सखायौ	सुधियौ	साधू	दातारौ	पितरौ
	बहु० शस्–	बालकान्	बहुत बालकों को	मुनीन्	पतीन्	सखीन्	सुधियः	साधून्	दातृन्	पितृन्
३—करण-तृतीया (से, के द्वारा)	ए० टा–	बालकेन	बालक से, के द्वारा	मुनिना	पत्या	सख्या	सुधिया	साधुना	दात्रा	पित्रा
	द्वि० भ्याम्–	बालकाभ्याम्	दो बालकों से, के द्वारा	मुनिभ्याम्	पतिभ्याम्	सखिभ्याम्	सुधीभ्याम्	साधुभ्याम्	दातृभ्याम्	पितृभ्याम्
	बहु० भिस्–	बालकैः	बहुत बालकों से, के द्वारा	मुनिभिः	पतिभिः	सखिभिः	सुधीभिः	साधुभिः	दातृभिः	पितृभिः
४—सम्प्रदान-चतुर्थी (के लिए, को)	ए० ङे–	बालकाय	बालक के लिए	मुनये	पत्ये	सख्ये	सुधिये	साधवे	दात्रे	पित्रे
	द्वि० भ्याम्–	बालकाभ्याम्	दो बालकों के लिए	मुनिभ्याम्	पतिभ्याम्	सखिभ्याम्	सुधीभ्याम्	साधुभ्याम्	दातृभ्याम्	पितृभ्याम्
	बहु० भ्यस्–	बालकेभ्यः	बहुत बालकों के लिए	मुनिभ्यः	पतिभ्यः	सखिभ्यः	सुधीभ्यः	साधुभ्यः	दातृभ्यः	पितृभ्यः
५—अपादान-पञ्चमी (से)	ए० ङसि–	बालकात्	बालक से	मुनेः	पत्युः	सख्युः	सुधियः	साधोः	दातुः	पितुः
	द्वि० भ्याम्–	बालकाभ्याम्	दो बालकों से	मुनिभ्याम्	पतिभ्याम्	सखिभ्याम्	सुधीभ्याम्	साधुभ्याम्	दातृभ्याम्	पितृभ्याम्
	बहु० भ्यस्–	बालकेभ्यः	बहुत बालकों से	मुनिभ्यः	पतिभ्यः	सखिभ्यः	सुधीभ्यः	साधुभ्यः	दातृभ्यः	पितृभ्यः
६—सम्बन्ध-षष्ठी (का, के की)	ए० ङस्–	बालकस्य	बालक का	मुनेः	पत्युः	सख्युः	सुधियः	साधोः	दातुः	पितुः
	द्वि० ओस्–	बालकयोः	दो बालकों का	मुन्योः	पत्योः	सख्योः	सुधियोः	साध्वोः	दात्रोः	पित्रोः
	बहु० आम्–	बालकानाम्	बहुत बालकों का	मुनीनाम्	पतीनाम्	सखीनाम्	सुधियाम्	साधूनाम्	दातृणाम्	पितृणाम्
७—अधिकरण-सप्तमी (में, पर)	ए० ङि–	बालके	बालक में, बालक पर	मुनौ	पत्यौ	सख्यौ	सुधियि	साधौ	दातरि	पितरि
	द्वि० ओस्–	बालकयोः	दो बालकों में, पर	मुन्योः	पत्योः	सख्योः	सुधियोः	साध्वोः	दात्रोः	पित्रोः
	बहु० सुप्–	बालकेषु	बहुत बालकों में, पर	मुनिषु	पतिषु	सखिषु	सुधीषु	साधुषु	दातृषु	पितृषु
८—सम्बोधन-प्रथमा (हे, अरे, रे)	ए० सु–	बालक	हे बालक !	मुने	पते	सखे	सुधीः	साधो	दातः	पितः
	द्वि० औ–	बालकौ	हे दो बालकों !	मुनी	पती	सखायौ	सुधियौ	साधू	दातारौ	पितरौ
	बहु० जस्–	बालकाः	हे बहुत बालकों !	मुनयः	पतयः	सखायः	सुधियः	साधवः	दातारः	पितरः

सूचना १—छात्रों को चाहिए कि वे बालक आदि शब्दों के प्रथमा के रूपों के साथ पठति पठतः पठन्ति, लिखति लिखतः लिखन्ति, करोति कुरुतः कुर्वन्ति, गच्छति गच्छतः गच्छन्ति, अस्ति, स्तः, सन्ति, आदि क्रियापदों को लगाकर अनुवाद बनाने का अभ्यास करें। २—कर्ता का "ने" चिह्न केवल भूतकाल में लगता है, इसे ध्यान में रखें। ३—सम्बन्ध कारक के दो और चिह्न होते हैं। जैसे—रा, रे, री तथा ना, ने नी। उदाहरण—हमारा, हमारे, हमारी, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, अपना, अपने, अपनी।

स्त्रीलिङ्ग अजन्त (स्वरान्त) शब्दों के रूप | **नपुंसकलिङ्ग अजन्त (स्वरान्त) शब्दों के रूप**

सूचना २—शब्दरूपों को कण्ठस्थ करते समय छात्रों को इस बात को भी समझते चलना चाहिए कि एक शब्द के रूप दूसरे शब्द के रूपों के साथ कहाँ-कहाँ किस-किस रूप में बदल जाते हैं। इसके साथ ही ह्रस्व एवं दीर्घ मत्राओं के शुद्ध उच्चारण पर भी विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

विद्या	**मति**	**नदी**	**स्त्री**	**धेनु**	**वधू**	**मातृ**	**गो**	**ज्ञान**	**वारि**	**दधि**	**वस्तु**
विद्या	बुद्धि	नदी	स्त्री	गाय	बहू	माता	गाय	ज्ञान	पानी	दही	सामान
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१–विद्या	मतिः	नदी	स्त्रीः	धेनुः	वधूः	माता	गौः	ज्ञानम्	वारि	दधि	वस्तु
विद्ये	मती	नद्यौ	स्त्रियौ	धेनू	वध्वौ	मातरौ	गावौ	ज्ञाने	वारिणी	दधिनी	वस्तुनी
विद्याः	मतयः	नद्यः	स्त्रियः	धेनवः	वध्वः	मातरः	गावः	ज्ञानानि	वारीणि	दधीनि	वस्तूनि
२–विद्याम्	मतिम्	नदीम्	स्त्रियम् स्त्रीम्	धेनुम्	वधूम्	मातरम्	गाम्	ज्ञानम्	वारि	दधि	वस्तु
विद्ये	मती	नद्यौ	स्त्रियौ	धेनू	वध्वौ	मातरौ	गावौ	ज्ञाने	वारिणी	दधिनी	वस्तुनी
विद्याः	मतीः	नदीः	स्त्रियः स्त्रीः	धेनूः	वधूः	मातॄः	गाः	ज्ञानानि	वारीणि	दधीनि	वस्तूनि
३–विद्यया	मत्या	नद्या	स्त्रिया	धेन्वा	वध्वा	मात्रा	गवा	ज्ञानेन	वारिणा	दध्ना	वस्तुना
विद्याभ्याम्	मतिभ्याम्	नदीभ्याम्	स्त्रीभ्याम्	धेनुभ्याम्	वधूभ्याम्	मातृभ्याम्	गोभ्याम्	ज्ञानाभ्याम्	वारिभ्याम्	दधिभ्याम्	वस्तुभ्याम्
विद्याभिः	मतिभिः	नदीभिः	स्त्रीभिः	धेनुभिः	वधूभिः	मातृभिः	गोभिः	ज्ञानैः	वारिभिः	दधिभिः	वस्तुभिः
४–विद्यायै	मत्यै, मतये	नद्यै	स्त्रियै	धेन्वै, धेनवे	वध्वै	मात्रे	गवे	ज्ञानाय	वारिणे	दध्ने	वस्तुने
विद्याभ्याम्	मतिभ्याम्	नदीभ्याम्	स्त्रीभ्याम्	धेनुभ्याम्	वधूभ्याम्	मातृभ्याम्	गोभ्याम्	ज्ञानाभ्याम्	वारिभ्याम्	दधिभ्याम्	वस्तुभ्याम्
विद्याभ्यः	मतिभ्यः	नदीभ्यः	स्त्रीभ्यः	धेनुभ्यः	वधूभ्यः	मातृभ्यः	गोभ्यः	ज्ञानेभ्यः	वारिभ्यः	दधिभ्यः	वस्तुभ्यः
५–विद्यायाः	मत्याः, मतेः	नद्याः	स्त्रियाः	धेन्वाः, धेनोः	वध्वाः	मातुः	गोः	ज्ञानात्	वारिणः	दध्नः	वस्तुनः
विद्याभ्याम्	मतिभ्याम्	नदीभ्याम्	स्त्रीभ्याम्	धेनुभ्याम्	वधूभ्याम्	मातृभ्याम्	गोभ्याम्	ज्ञानाभ्याम्	वारिभ्याम्	दधिभ्याम्	वस्तुभ्याम्
विद्याभ्यः	मतिभ्यः	नदीभ्यः	स्त्रीभ्यः	धेनुभ्यः	वधूभ्यः	मातृभ्यः	गोभ्यः	ज्ञानेभ्यः	वारिभ्यः	दधिभ्यः	वस्तुभ्यः
६–विद्यायाः	मत्याः मतेः	नद्याः	स्त्रियाः	धेन्वाः धेनोः	वध्वाः	मातुः	गोः	ज्ञानस्य	वारिणः	दध्नः	वस्तुनः
विद्ययोः	मत्योः	नद्योः	स्त्रियोः	धेन्वोः	वध्वोः	मात्रोः	गवोः	ज्ञानयोः	वारिणोः	दध्नोः	वस्तुनोः
विद्यानाम्	मतीनाम्	नदीनाम्	स्त्रीणाम्	धेनूनाम्	वधूनाम्	मातृणाम्	गवाम्	ज्ञानानाम्	वारीणाम्	दध्नाम्	वस्तूनाम्
७–विद्यायाम्	मत्याम्, मतौ	नद्याम्	स्त्रियाम्	धेन्वाम् धेनौ	वध्वाम्	मातरि	गवि	ज्ञाने	वारिणि	दध्नि, दधनि	वस्तुनि
विद्ययोः	मत्योः	नद्योः	स्त्रियोः	धेन्वोः	वध्वोः	मात्रोः	गवोः	ज्ञानयोः	वारिणोः	दध्नोः	वस्तुनोः
विद्यासु	मतिषु	नदीषु	स्त्रीषु	धेनुषु	वधूषु	मातृषु	गोषु	ज्ञानेषु	वारिषु	दधिषु	वस्तुषु
८–विद्ये	मते	तदि	स्त्रि	धेनो	वधु	मातः	गौः	ज्ञान	वारे, वारि	दधे, दधि	वस्तु, वस्तो
विद्ये	मती	नद्यौ	स्त्रियौ	धेनू	वध्वौ	मातरौ	गावौ	ज्ञाने	वारिणी	दधिनी	वस्तुनी
विद्याः	मतयः	नद्यः	स्त्रियः	धेनवः	वध्वः	मातरः	गावः	ज्ञानानि	वारीणि	दधीनि	वस्तूनि

विद्या शब्द के समान पाठशाला, शिक्षा, परीक्षा, लिपिपुस्तिका, घण्टिका, कुञ्जिका, क्षुरिका, पेटिका आदि, नदी शब्द के समान लेखनी, मसी, नियमावली, मार्जनी (झाड़ू) आदि तथा ज्ञान शब्द के समान अक्षर, पुस्तक, श्यामपट्ट, द्वार, कपाट, तालक, अन्न, वस्त्र, शरीर, भवन आदि शब्दों के रूप चलाने चाहिए।

संज्ञावाचक तथा विशेषण पुंलिङ्ग हलन्त शब्दों के रूप

सूचना ३—शब्दरूपों को कण्ठस्थ करते समय प्रत्येक रूप के अर्थ पर ध्यान देना चाहिए और प्रत्येक रूप का अनुवाद में प्रयोग करने का अभ्यास करना चाहिए। एक शब्द के चौबीस रूपों के साथ चौबीस वाक्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। साथ ही छात्रों को शब्दरूपों की परस्पर भिन्नता पर भी ध्यान देकर समझना चाहिये।

वणिज्	मरुत्	श्रीमत्	महत्	पठत्	ददत्	सुहृद्	गुणिन्	महिमन्	आत्मन्	पथिन्	राजन्
बनिया	वायु	श्रीमान्	महान्	पढ़ता हुआ	देता हुआ	मित्र	गुणी	महिमा	आत्मा	मार्ग	राजा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१–वणिक्-ग्	मरुत्	श्रीमान्	महान्	पठन्	ददत्	सुहृत्, द्	गुणी	महिमा	आत्मा	पन्थाः	राजा
वणिजौ	मरुतौ	श्रीमन्तौ	महान्तौ	पठन्तौ	ददतौ	सुहृदौ	गुणिनौ	महिमानौ	आत्मानौ	पन्थानौ	राजानौ
वणिजः	मरुतः	श्रीमन्तः	महान्तः	पठन्तः	ददतः	सुहृदः	गुणिनः	महिमानः	आत्मानः	पन्थानः	राजानः
२–वणिजम्	मरुतम्	श्रीमन्तम्	महान्तम्	पठन्तम्	ददतम्	सुहृदम्	गुणिनम्	महिमानम्	आत्मानम्	पन्थानम्	राजानम्
वणिजौ	मरुतौ	श्रीमन्तौ	महान्तौ	पठन्तौ	ददतौ	सुहृदौ	गुणिनौ	महिमानौ	आत्मानौ	पन्थानौ	राजानौ
वणिजः	मरुतः	श्रीमतः	महतः	पठतः	ददतः	सुहृदः	गुणिनः	महिम्नः	आत्मनः	पथः	राज्ञः
३–वणिजा	मरुता	श्रीमता	महता	पठता	ददता	सुहृदा	गुणिना	महिम्ना	आत्मना	पथा	राज्ञा
वणिग्भ्याम्	मरुद्भ्याम्	श्रीमद्भ्याम्	महद्भ्याम्	पठद्भ्याम्	ददद्भ्याम्	सुहृद्भ्याम्	गुणिभ्याम्	महिमभ्याम्	आत्मभ्याम्	पथिभ्याम्	राजभ्याम्
वणिग्भिः	मरुद्भिः	श्रीमद्भिः	महद्भिः	पठद्भिः	ददद्भिः	सुहृद्भिः	गुणिभिः	महिमभिः	आत्मभिः	पथिभिः	राजभिः
४–वणिजे	मरुते	श्रीमते	महते	पठते	ददते	सुहृदे	गुणिने	महिम्ने	आत्मने	पथे	राज्ञे
वणिग्भ्याम्	मरुद्भ्याम्	श्रीमद्भ्याम्	महद्भ्याम्	पठद्भ्याम्	ददद्भ्याम्	सुहृद्भ्याम्	गुणिभ्याम्	महिमभ्याम्	आत्मभ्याम्	पथिभ्याम्	राजभ्याम्
वणिग्भ्यः	मरुद्भ्यः	श्रीमद्भ्यः	महद्भ्यः	पठद्भ्यः	ददद्भ्यः	सुहृद्भ्यः	गुणिभ्यः	महिमभ्यः	आत्मभ्यः	पथिभ्यः	राजभ्यः
५–वणिजः	मरुतः	श्रीमतः	महतः	पठतः	ददतः	सुहृदः	गुणिनः	महिम्नः	आत्मनः	पथः	राज्ञः
वणिग्भ्याम्	मरुद्भ्याम्	श्रीमद्भ्याम्	महद्भ्याम्	पठद्भ्याम्	ददद्भ्याम्	सुहृद्भ्याम्	गुणिभ्याम्	महिमभ्याम्	आत्मभ्याम्	पथिभ्याम्	राजभ्याम्
वणिग्भ्यः	मरुद्भ्यः	श्रीमद्भ्यः	महद्भ्यः	पठद्भ्यः	ददद्भ्यः	सुहृद्भ्यः	गुणिभ्यः	महिमभ्यः	आत्मभ्यः	पथिभ्यः	राजभ्यः
६–वणिजः	मरुतः	श्रीमतः	महतः	पठतः	ददतः	सुहृदः	गुणिनः	महिम्नः	आत्मनः	पथः	राज्ञः
वणिजोः	मरुतोः	श्रीमतोः	महतोः	पठतोः	ददतोः	सुहृदोः	गुणिनोः	महिम्नोः	आत्मनोः	पथोः	राज्ञोः
वणिजाम्	मरुताम्	श्रीमताम्	महताम्	पठताम्	ददताम्	सुहृदाम्	गुणिनाम्	महिम्नाम्	आत्मनाम्	पथाम्	राज्ञाम्
७–वणिजि	मरुति	श्रीमति	महति	पठति	ददति	सुहृदि	गुणिनि	महिम्नि	आत्मनि	पथि	राज्ञि, राजनि
वणिजोः	मरुतोः	श्रीमतोः	महतोः	पठतोः	ददतोः	सुहृदोः	गुणिनोः	महिम्नोः	आत्मनोः	पथोः	राज्ञोः
वणिक्षु	मरुत्सु	श्रीमत्सु	महत्सु	पठत्सु	ददत्सु	सुहृत्सु	गुणिषु	महिमसु	आत्मसु	पथिषु	राजसु
८–वणिक्-ग्	मरुत्	श्रीमन्	महन्	पठन्	ददत्	सुहृत्, द्	गुणिन्	महिमन्	आत्मन्	पथिन्	राजन्
वणिजौ	मरुतौ	श्रीमन्तौ	महान्तौ	पठन्तौ	ददतौ	सुहृदौ	गुणिनौ	महिमानौ	आत्मानौ	पन्थानौ	राजानौ
वणिजः	मरुतः	श्रीमन्तः	महान्तः	पठन्तः	ददतः	सुहृदः	गुणिनः	महिमानः	आत्मानः	पन्थानः	राजानः

ऊपर लिखित शब्दों में श्रीमत्, महत्, पठत्, गुणिन्, विद्वस्, गरीयस् आदि शब्द विशेषण हैं। इनके स्त्रीलिङ्ग में श्रीमती, महती, पठन्ती, ददती, गुणिनी, विदुषी गरीयसी आदि शब्दों के रूप नदी शब्द के समान चलेंगे। इनके नपुंसकलिङ्ग के रूप अगले पृष्ठ के नीचे देखें।

पुंलिङ्ग हलन्त शब्दों के रूप **संज्ञावाचक स्त्रीलिङ्ग हलन्त शब्दों के रूप** **नपुंसकलिङ्ग हलन्त शब्दों के रूप**

सूचना ४—शब्दरूपों को कण्ठस्थ करते समय छात्रों को इस बात को भी समझना चाहिए कि वह शब्द विशेष्य है या विशेषण। यदि विशेषण हो तो उसके तीनों लिङ्गों में रूप चलाने का अभ्यास आना चाहिए तथा विशेष्य के साथ उनका प्रयोग करना सीखना चाहिए।

	विद्वस्	वेधस्	महीयस्	वाच्	स्रज्	सीमन्	आशिस्	उपानह्	जगत्	नामन्	कर्मन्	मनस्
	विद्वान्	ब्रह्मा	अधिक महान्	वाणी	माला	सीमा	आशीर्वाद	जूता	संसार	नाम	कर्म	मन
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१—	विद्वान्	वेधाः	महीयान्	वाक्-ग्	स्रक्-ग्	सीमा	आशीः	उपानत्-द्	जगत्	नाम	कर्म	मनः
	विद्वांसौ	वेधसौ	महीयांसौ	वाचौ	स्रजौ	सीमानौ	आशिषौ	उपानहौ	जगती	नामनी नाम्नी	कर्मणी	मनसी
	विद्वांसः	वेधसः	महीयांसः	वाचः	स्रजः	सीमानः	आशिषः	उपानहः	जगन्ति	नामानि	कर्माणि	मनांसि
२	विद्वांसम्	वेधसम्	महीयांसम्	वाचम्	स्रजम्	सीमानम्	आशिषम्	उपानहम्	जगत्	नाम	कर्म	मनः
	विद्वांसौ	वेधसौ	महीयांसौ	वाचौ	स्रजौ	सीभानौ	आशिषौ	उपानहौ	जगती	नामनी,नाम्नी	कर्मणी	मनसी
	विदुषः	वेधसः	महीयसः	वाचः	स्रजः	सीम्नः	आशिषः	उपानहः	जगन्ति	नामानि	कर्माणि	मनांसि
३—	विदुषा	वेधसा	महीयसा	वाचा	स्रजा	सीम्ना	आशिषा	उपानहा	जगता	नाम्ना	कर्मणा	मनसा
	विद्वद्भ्याम्	वेधोभ्याम्	महीयोभ्याम्	वाग्भ्याम्	स्रग्भ्याम्	सीमभ्याम्	आशीर्भ्याम्	उपानद्भ्याम्	जगद्भ्याम्	नामभ्याम्	कर्मभ्याम्	मनोभ्याम्
	विद्वद्भिः	वेधोभिः	महीयोभिः	वाग्भिः	स्रग्भिः	सीमभिः	आशीर्भिः	उपानद्भिः	जगद्भिः	नामभिः	कर्मभिः	मनोभिः
४—	विदुषे	वेधसे	महीयसे	वाचे	स्रजे	सीम्ने	आशिषे	उपानहे	जगते	नाम्ने	कर्मणे	मनसे
	विद्वद्भ्याम्	वेधोभ्याम्	महीयोभ्याम्	वाग्भ्याम्	स्रग्भ्याम्	सीमभ्याम्	आशीर्भ्याम्	उपानद्भ्याम्	जगद्भ्याम्	नामभ्याम्	कर्मभ्याम्	मनोभ्याम्
	विद्वद्भ्यः	वेधोभ्यः	महीयोभ्यः	वाग्भ्यः	स्रग्भ्यः	सीमभ्यः	आशीर्भ्यः	उपानद्भ्यः	जगद्भ्यः	नामभ्यः	कर्मभ्यः	मनोभ्यः
५—	विदुषः	वेधसः	महीयसः	वाचः	स्रजः	सीम्नः	आशिषः	उपानहः	जगतः	नाम्नः	कर्मणः	मनसः
	विद्वद्भ्याम्	वेधोभ्याम्	महीयोभ्याम्	वाग्भ्याम्	स्रग्भ्याम्	सीमभ्याम्	आशीर्भ्याम्	उपानद्भ्याम्	जगद्भ्याम्	नामभ्याम्	कर्मभ्याम्	मनोभ्याम्
	विद्वद्भ्यः	वेधोभ्यः	महीयोभ्यः	वाग्भ्यः	स्रग्भ्यः	सीमभ्यः	आशीर्भ्यः	उपानद्भ्यः	जगद्भ्यः	नामभ्यः	कर्मभ्यः	मनोभ्यः
६—	विदुषः	वेधसः	महीयसः	वाचः	स्रजः	सीम्नः	आशिषः	उपानहः	जगतः	नाम्नः	कर्मणः	मनसः
	विदुषोः	वेधसोः	महीयसोः	वाचोः	स्रजोः	सीम्नोः	आशिषोः	उपानहोः	जगतोः	नाम्नोः	कर्मणोः	मनसोः
	विदुषाम्	वेधसाम्	महीयसाम्	वाचाम्	स्रजाम्	सीम्नाम्	आशिषाम्	उपानहाम्	जगताम्	नाम्नाम्	कर्मणाम्	मनसाम्
७—	विदुषि	वेधसि	महीयसि	वाचि	स्रजि	सीम्नि	आशिषि	उपानहि	जगति	नाम्नि	कर्मणि	मनसि
	विदुषोः	वेधसोः	महीयसोः	वाचोः	स्रजोः	सीम्नोः	आशिषोः	उपानहोः	जगतोः	नाम्नोः	कर्मणोः	मनसोः
	विद्वत्सु	वेधस्सु	महीयस्सु	वाक्षु	स्रक्षु	सीमसु	आशीष्षु	उपानत्सु	जगत्सु	नामसु	कर्मसु	मनस्सु
८—	विद्वन्	वेधः	महीयः	वाक्-ग्	स्रक्-ग्	सीमन्	आशीः	उपानत्-द्	जगत्	नामन्, नाम	कर्मन्	मनः
	विद्वांसौ	वेधसौ	महीयांसौ	वाचौ	स्रजौ	सीमानौ	आशिषौ	उपानहौ	जगती	नामनी	कर्मणी	मनसी
	विद्वांसः	वेधसः	महीयांसः	वाचः	स्रजः	सीमानः	आशिषः	उपानहः	जगन्ति	नामानि	कर्माणि	मनांसि

पृष्ठ ४ के नीचे लिखे विशेषण शब्दों के नपुंसकलिङ्ग में क्रमशः "श्रीमत् श्रीमती श्रीमन्ति, महत् महती महान्ति, पठत् पठती पठन्ति, गुणि गुणिनी गुणीनि, महीयः महीयसी महीयांसि" इस प्रकार के रूप कर्ता एवं कर्म में चलेंगे। शेष रूप पुलिङ्ग के समान चलेंगे।

उत्तम, मध्यम तथा प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम शब्दों के पुंलिङ्ग रूप

निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों में अस्मत् एवं युष्मत् शब्द को छोड़कर शेष सभी शब्दों के तीनों लिङ्गों में रूप चलते हैं। सर्वनाम शब्दों में अस्मत्, युष्मत्, भवत्, अदस् तथा इदम् इन शब्दों के रूप भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं परन्तु शेष सर्वनाम शब्दों के रूपों में समानता होती है। इसे विद्यार्थी ध्यान देकर समझें।

अस्मत् (उ० पु०) मैं, हम	युष्मत् (म० पु०) तू-तुम	भवत् (प्र० पु०) आप	अदस् (प्र० पु०) वह-उस	इदम् (प्र० पु०) यह-इस	एतत् (प्र० पु०) यह-इस	तद् (प्र० पु०) वह-उस	यत् (प्र० पु०) जो-जिस	किम् (प्र० पु०) कौन-किस	किञ्चित् (प्र० पु०) कोइ-किसी	सर्व (प्र० पु०) सब	बालक (प्र० पु०) बालक
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१–अहम्	त्वम्	भवान्	असौ	अयम्	एषः	सः	यः	कः	कश्चित्	सर्वः	बालकः
आवाम्	युवाम्	भवन्तौ	अमू	इमौ	एतौ	तौ	यौ	कौ	कौचित्	सर्वौ	बालकौ
वयम्	यूयम्	भवन्तः	अमी	इमे	एते	ते	ये	के	केचित्	सर्वे	बालकाः
२–माम्, मा	त्वाम्, त्वा	भवन्तम्	अमुम्	इमम्	एतम्	तम्	यम्	कम्	कञ्चित्	सर्वम्	बालकम्
आवाम्, नौ	युवाम्, वाम्	भवन्तौ	अमू	इमौ	एतौ	तौ	यौ	कौ	कौचित्	सर्वौ	बालकौ
अस्मान्, नः	युष्मान्, वः	भवतः	अमून्	इमान्	एतान्	तान्	यान्	कान्	कांश्चित्	सर्वान्	बालकान्
३–मया	त्वया	भवता	अमुना	अनेन	एतेन	तेन	येन	केन	केनचित्	सर्वेण	बालकेन
आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	भवद्भ्याम्	अमूभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	ताभ्याम	याभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याञ्चित्	सर्वाभ्याम्	बालकाभ्याम्
अस्माभिः	युष्माभिः	भवद्भिः	अमीभिः	एभिः	एतैः	तैः	यैः	कैः	कैश्चित्	सर्वैः	बालकैः
४–मह्यम्, मे	तुभ्यम्, ते	भवते	अमुष्मै	अस्मै	एतस्मै	तस्मै	यस्मै	कस्मै	कस्मैचित्	सर्वस्मै	बालकाय
आवाभ्याम्, नौ	युवाभ्याम्, वाम्	भवद्भ्याम्	अमूभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	ताभ्याम्	याभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याञ्चित्	सर्वाभ्याम्	बालकाभ्याम्
अस्मभ्यम्, नः	युष्मभ्यम्, वः	भवद्भ्यः	अमीभ्यः	एभ्यः	एतेभ्यः	तेभ्यः	येभ्यः	केभ्यः	केभ्यश्चित्	सर्वेभ्यः	बालकेभ्यः
५–मत्	त्वत्	भवतः	अमुष्मात्	अस्मात्	एतस्मात्	तस्मात्	यस्मात्	कस्मात्	कस्माच्चित्	सर्वस्मात्	बालकात्
आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	भवद्भ्याम्	अमूभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	ताभ्याम	याभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याञ्चित्	सर्वाभ्याम्	बालकाभ्याम्
अस्मत्	युष्मत्	भवद्भ्यः	अमीभ्यः	एभ्यः	एतेभ्यः	तेभ्यः	येभ्यः	केभ्यः	केभ्यश्चित्	सर्वेभ्यः	बालकेभ्यः
६–मम, मे	तव, ते	भवतः	अमुष्य	अस्य	एतस्य	तस्य	यस्य	कस्य	कस्यचित्	सर्वस्य	बालकस्य
आवयोः, नौ	युवयोः, वाम्	भवतोः	अमुयोः	अनयोः	एतयोः	तयोः	ययोः	कयोः	कयोश्चित्	सर्वयोः	बालकयोः
अस्माकम्, नः	युष्माकम्, वः	भवताम्	अमीषाम्	एषाम्	एतेषाम्	तेषाम्	येषाम्	केषाम्	केषाञ्चित्	सर्वेषाम्	बालकानाम्
७–मयि	त्वयि	भवति	अमुष्मिन्	अस्मिन्	एतस्मिन्	तस्मिन्	यस्मिन्	कस्मिन्	कस्मिश्चित्	सर्वस्मिन्	बालके
आवयोः	युवयोः	भवतोः	अमुयोः	अनयोः	एतयोः	तयोः	ययोः	कयोः	कयोश्चित्	सर्वयोः	बालकयोः
अस्मासु	युष्मासु	भवत्सु	अमीषु	एषु	एतेषु	तेषु	येषु	केषु	केषुचित्	सर्वेषु	बालकेषु

सूचना—१. इस पृष्ठ के सभी सर्वनाम शब्दों के रूपों के साथ बालक शब्द के रूपों को जोड़कर सभी विभक्तियों और सभी वचनों में अनुवाद बनाने का अभ्यास करना चाहिए। बालक शब्द के समान ही अन्य पुंलिङ्ग शब्दों के साथ भी अनुवाद बनाने का अभ्यास करना चाहिए। २. विश्व, अन्य, अन्यतर, इतर आदि शब्दों के रूप सर्व के समान चलेंगे। समस्त सर्वनाम शब्दों के विशेष ज्ञान के लिए छात्रों को लघुकौमुदी आदि का अध्ययन करना चाहिए।

प्रथमपुरुष वाचक सर्वनाम शब्दों के स्त्रीलिङ्ग के रूप

अदस्	इदम्	एतद्	तद्	यद्	किम्	किञ्चित्	सर्व	भवती (आप)	बालिका
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१–असौ	इयम्	एषा	सा	या	का	काचित्	सर्वा	भवती	बालिका
अमू	इमे	एते	ते	ये	के	केचित्	सर्वे	भवत्यौ	बालिके
अमूः	इमाः	एताः	ताः	याः	काः	काश्चित्	सर्वाः	भवत्यः	बालिकाः
२–अमुम्	इमाम्	एताम्	ताम्	याम्	काम्	काञ्चित्	सर्वाम्	भवतीम्	बालिकाम्
अमू	इमे	एते	ते	ये	के	केचित्	सर्वे	भवत्यौ	बालिके
अमूः	इमाः	एताः	ताः	याः	काः	काश्चित्	सर्वाः	भवतीः	बालिकाः
३–अमुया	अनया	एतया	तया	यथा	कया	कयाचित्	सर्वया	भवत्या	बालिकया
अमूभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	ताभ्याम्	याभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याञ्चित्	सर्वाभ्याम्	भवतीभ्याम्	बालिकाभ्याम्
अमूभिः	आभिः	एताभिः	ताभिः	याभिः	काभिः	काभिश्चित्	सर्वाभिः	भवतीभिः	बालिकाभिः
४–अमुष्यै	अस्यै	एतस्यै	त[illegible]	यस्यै	कस्यै	कस्यैचित्	सर्वस्यै	भवत्यै	बालिकायै
अमूभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	ताभ्याम्	याभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याञ्चित्	सर्वाभ्याम्	भवतीभ्याम्	बालिकाभ्याम्
अमूभ्यः	आभ्यः	एताभ्यः	ताभ्यः	याभ्यः	काभ्यः	काभ्यश्चित्	सर्वाभ्यः	भवतीभ्यः	बालिकाभ्यः
५–अमुष्याः	अस्याः	एतस्याः	तस्याः	यस्याः	कस्याः	कस्याश्चित्	सर्वस्याः	भवत्याः	बालिकायाः]
अमूभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	ताभ्याम्	याभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याञ्चित्	सर्वाभ्याम्	भवतीभ्याम्	बालिकाभ्याम्
अमूभ्यः	आभ्यः	एताभ्यः	ताभ्यः	याभ्यः	काभ्यः	काभ्यश्चित्	सर्वाभ्यः	भवतीभ्यः	कालिकाभ्यः
६–अमुष्याः	अस्याः	एतस्याः	तस्याः	यस्याः	कस्याः	कस्याश्चित्	सर्वस्याः	भवत्याः	बालिकायाः
अमुयोः	अनयोः	एतयोः	तयोः	ययोः	कयोः	कयोश्चित्	सर्वयोः	भवत्योः	बालिकयोः
अमूषाम्	आसाम्	एतासाम्	तासाम्	यासाम्	कासाम्	कासाञ्चित्	सर्वासाम्	भवतीनाम्	बालिकानाम्
७–अमुष्याम्	अस्याम्	एतस्याम्	तस्याम्	यस्याम्	कस्याम्	कस्याञ्चित्	सर्वस्याम्	भवत्याम्	बालिकायाम्
अमुयोः	अनयोः	एतयोः	तयोः	ययोः	कयोः	कयोश्चित्	सर्वयोः	भवत्योः	बालिकयोः
अमूषु	आसु	एतासु	तासु	यासु	कासु	कासुचित्	सर्वासु	भवतीषु	बालिकासु

सूचना—२. इस पृष्ठ में सर्वनाम शब्दों के रूप दिये गये हैं। इन रूपों के साथ बालिका शब्द के रूपों को जोड़कर सभी विभक्तियों में अनुवाद बनाने का अभ्यास करना चाहिए।

नपुंसकलिङ्ग के रूप

अदस्

अदः अमू अमूनि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

इदम्

इदम् इमे इमानि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

एतद्

एतद् एते एतानि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

तद्

तद् ते तानि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

यद्

यद् ये यानि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

किम्

किम् के कानि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

किञ्चित्

किञ्चित् केचित् कानिचित् [प्र० द्वि०]

सर्व

सर्वम् सर्वे सर्वाणि [प्र० द्वि०]
शेष पुंलिङ्ग के समान।

नपुंसकलिङ्ग के रूपों के साथ पुस्तक शब्द के रूपों को जोड़कर अनुवाद बनाना चाहिए।

संख्यावाचक शब्द और उनके रूप

संख्यावाचक शब्दों में एक, द्वि, त्रि, चतुर्, उभ, उभय तथा कतिपय शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में चलते है। इनका प्रयोग विशेष्य के अनुसार करना चाहिए। यथा—एकः बालकः, एका बालिका, एकं पुस्तकम्, द्वौ बालकौ, द्वे बालिके, द्वे पुस्तके। त्रयः बालकाः, तिस्रः बालिकाः, त्रीणि पुस्तकानि। चत्वारः बालकाः, चतस्रः बालिकाः, चत्वारि पुस्तकानि इत्यादि। पञ्चन् आदि शब्दों में लिङ्ग भेद नहीं होता—यथा—पञ्च बालकाः, पञ्च पुस्तकानि।

		कर्ता	कर्म	करण	सम्प्रदान	अपादान	सम्बन्ध	अधिकरण
एक (एक)	पु०	एकः	एकम्	एकेन	एकस्मै	एकस्मात्	एकस्य	एकस्मिन्
	स्त्री०	एका	एकाम्	एकया	एकस्यै	एकस्याः	एकस्याः	एकस्याम्
	न०	एकम्	एकम्	एकेन	एकस्मै	एकस्मात्	एकस्य	एकस्मिन्
द्वि (दो)	पु०	द्वौ	द्वौ	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः
	स्त्री०	द्वे	द्वे	"	"	"	"	"
	न०	द्वे	द्वे	"	"	"	"	"
उभ (दोनों)	पु०	उभौ	उभौ	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभयोः	उभयोः
	स्त्री०	उभे	उभे	"	"	"	"	"
	न०	उभे	उभे	"	"	"	"	"
उभय (दोनों)	पु०	उभयः	उभयम्	उभयेन	उभयस्मै	उभयस्मात्	उभयस्य	उभयस्मिन्
	पु०	उभये	उभयान्	उभयैः	उभयेभ्यः	उभयेभ्यः	उभयेषाम्	उभयेषु
त्रि (तीन)	पु०	त्रयः	त्रीन्	त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रयाणाम्	त्रिषु
	स्त्री०	तिस्रः	तिस्रः	तिसृभिः	तिसृभ्यः	तिसृभ्यः	तिसृणाम्	तिसृषु
	न०	त्रीणि	त्रीणि	त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रयाणाम्	त्रिषु
चतुर् (चार)	पु०	चत्वारः	चतुरः	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्णाम्	चतुर्षु
	स्त्री०	चतस्रः	चतस्रः	चतसृभिः	चतसृभ्यः	चतसृभ्यः	चतसृणाम्	चतसृषु
	न०	चत्वारि	चत्वारि	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	[illegible]	चतुर्षु
पञ्चन् (पाँच)		पञ्च	पञ्च	पञ्चभिः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चानाम्	पञ्चसु
षष् (छ)		षट्, षड्	षट्, षड्	षड्भिः	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु
सप्तन् (सात)		सप्त	सप्त	सप्तभिः	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः	सप्तानाम्	सप्तसु
अष्टन् (आठ)		अष्ट	अष्ट	अष्टभिः	अष्टभ्यः	अष्टाभ्यः	अष्टानाम्	अष्टसु
		अष्टौ	अष्टौ	अष्टाभिः	अष्टाभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टानाम्	अष्टसु
नवन् (नव)		नव	नव	नवभिः	नवभ्यः	नवभ्यः	नवानाम्	नवसु
दशन् (दश)		दश	दश	दशभिः	दशभ्यः	दशभ्यः	दशानाम्	दशसु

विंशति (बीस) स्त्री० विंशतिः विंशतिम् विंशत्या विंशत्यै विंशत्याः विंशत्याः विंशत्याम्
विंशतये-विंशतेः-विंशतेः-विंशतौ

त्रिंशत् (तीस) स्त्री० त्रिंशत् त्रिंशतम् त्रिंशता त्रिंशते त्रिंशतः त्रिंशतः त्रिंशति

शत् (सौ) नं० शतम् शतम् शतेन शताय शतात् शतस्य शते

सहस्र (हजार) नं० सहस्रम् सहस्रम् सहस्रेण सहस्राय सहस्रात् सहस्रस्य सहस्रे

कति (कितना) नं० कति कति कतिभिः कतिभ्यः कतिभ्यः कतीनाम् कतिषु

कति शब्द के रूप सभी लिङ्गों में एक समान ही होते हैं

कतिपय (कुछ) कतिपयाः कतिपये, कतिपयान् कतिपयैः कतिपयेभ्यः
कतिपयेभ्यः कतिपयानाम् कतिपयेषु

कतिपय शब्द के स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप रमा एवं ज्ञान शब्द के समान चलेंगे

कुछ ज्ञातव्य बातें—१. उभय शब्द का रूप यहाँ केवल पुंलिङ्ग में ही दिया गया है। स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में उसके रूप नदी एवं सर्व शब्द के समान चलेंगे उभय शब्द का द्विवचन में रूप नहीं चलता।

२. नवन् शब्द से लेकर अष्टादशन् तक के शब्दों के रूप नवन् शब्द के समान ही चलेंगे। ३. उनविंशति (१९) विंशति (२०) षष्टि (६०) सप्तति (७०) अशीति (८०) नवति (९०) शब्द के रूप मति शब्द के समान चलेंगे। इन शब्दों के रूप सदा एकवचन में ही चलते हैं। ४. त्रिंशत् (३०) चत्वारिंशत् (४०) पञ्चाशत् (५०) शब्दों के रूप सरित् शब्द के समान चलेंगे। इनके रूप भी सदा एकवचन में ही चलते हैं। ५. शत (१००) सहस्र (१०००) अयुत (१००००) लक्ष (१०००००) शब्दों के रूप ज्ञान शब्द के समान चलते हैं। प्रयोगानुसार एकवचन तथा बहुवचन दोनों में ही इनके रूप चलते है। ६. कोटि शब्द स्त्रीलिङ्ग है और इसके रूप मति शब्द के समान चलेंगे। ७. जब विंशति आदि शब्द विशेष्य के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब इनमें भी द्विवचन बहुवचन होते हैं। यथा—द्वे विंशती। तिस्रः विंशतयः इत्यादि। ८. पौने, सवा तथा साढ़े इन शब्दों के लिए पादोन, सपाद तथा सार्द्ध शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। यथा—पौने पाँच—पादोनपञ्च, सवा पाँच—सपादपञ्च तथा साढ़े पाँच—सार्द्धपञ्च। डेढ़ के लिए सार्द्धैक अथवा सार्द्ध शब्द का प्रयोग किया जाता है। दुगुना, तिगुना, चौगुना आदि के लिए द्विगुण, त्रिगुण, चतुर्गुण आदि का प्रयोग होता है।

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होनेवाले पूरणार्थक संख्यावाचक शब्द

(निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग विशेष्य के अनुसार करना चाहिए)

संस्कृत पुं० स्त्री० न०	हिन्दी पुं० स्त्री०	संस्कृत पुं० स्त्री० न०	हिन्दी पुं० स्त्री०
प्रथमः-मा-मम्	पहला-ली	त्रयोविंशः-शी - शम्	तेइसवाँ-वी
आद्यः-द्या-द्यम्		चतुर्विंशः-शी ,,	चौबीसवाँ-वी
आदिमः-मा-मम्		पञ्चविंशः-शी ,,	पचीसवाँ-वी
द्वितीयः-या-यम्	दूसरा-री	षड्विंशः-शी ,,	छब्बीसवाँ-वी
तृतीयः-या ,,	तीसरा-री	सप्तविंशः-शी ,,	सत्ताइसवाँ-वी
चतुर्थः-र्थी ,,	चौथा-थी	अष्टाविंशः-शी ,,	अट्ठाइसवाँ-वी
पञ्चमः-मी ,,	पाचवाँ-वी	उनत्रिंशः-शी ,,	उन्तीसवाँ-वी
षष्ठः-ष्ठी ,,	छठवाँ-वीं	त्रिंशः-शी ,,	तीसवाँ-वी
सप्तमः-मी ,,	सातवाँ-वी	एकत्रिंशः-शी ,,	इकतीसवाँ-वी
अष्टमः-मी ,,	आठवाँ-वी	द्वात्रिंशः-शी ,,	बत्तीसवाँ-वी
नवमः-मी ,,	नौवाँ-वी	त्रयस्त्रिंशः-शी ,,	तैंतीसवाँ-वी
दशमः-मी ,,	दसवाँ-वी	चतुस्त्रिंशः-शी ,,	चौंतीसवाँ-वी
एकादशः-शी ,,	ग्यारहवाँ-वी	उनचत्वारिंशः-शी ,,	उनचालिसवाँ-वी
द्वादशः-शी ,,	बारहवाँ-वी	चत्वारिंशः-शी ,,	चालीसवाँ-वी
त्रयोदशः-शी ,,	तेरहवाँ-वी	उनपञ्चाशः-शी ,,	उनचासवाँ-वी
चतुर्दशः-शी ,,	चौदहवाँ-वी	पञ्चाशः-शी ,,	पचासवाँ-वी
पञ्चदशः-शी ,,	पन्द्रहवाँ-वी	षष्ठितमः-मी — मम्	साठवाँ-वी
षोडशः-शी ,,	सोलहवाँ-वी	सप्ततितमः-मी ,,	सत्तरवाँ-वी
सप्तदशः-शी ,,	सत्रहवाँ-वी	अशीतितमः-मी ,,	अस्सीवाँ-वी
अष्टादशः-शी ,,	अट्ठारहवाँ-वी	नवतितमः-मी ,,	नब्बेवाँ-वी-
ऊनविंशः-शी ,,	उन्नीसवाँ-वी	शततमः-मी	सौवाँ-वी
विंशः-शी ,,	बीसवाँ-वी	सहस्रतमः-मी ,,	हजारवाँ-वी
एकविंशः-शी ,,	इक्कीसवाँ-वी		
द्वाविंशः-शी ,,	बाइसवाँ-वी,		

सूचना—उनविंशति से लेकर आगे के शब्दों से पूरणार्थक संख्या बनाने के लिए 'तम' प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। यथा—उनविंशतितमः, आदि। प्रथम आदि शब्द के रूप नपुंसकलिङ्ग में ज्ञान शब्द के तरह चलेंगे।

कुछ व्यवहारोपयोगी अजन्त एवं हलन्त विशेषण शब्द

(निम्नलिखित विशेषण शब्दों में अकारान्त शब्दों के स्त्रीलिङ्ग रूप रमा शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप ज्ञान शब्द के समान चलेंगे। हलन्त विशेषण शब्दों तकारान्त एवं नकारान्त, सकारान्त शब्दों के तीनों लिङ्गों के रूप हलन्त शब्दों में देखें)

अजन्त विशेषण शब्द हिन्दी संस्कृत	हिन्दी संस्कृत	हलन्त विशेषण शब्द हिन्दी संस्कृत
		तकारान्त
सब का–सार्वजनिक	आप जैसा–भवादृश	बुद्धिमान्–बुद्धिमत्
दूर का–दूरस्थ	तुम्हारे जैसा–त्वादृश	गुणवान्–गुणवत्
समीप का–समीपस्थ	मुझ जैसा–मादृश	महान्–महत्
पूर्व का–पौर्वात्य, प्राच्य	हम लोग जैसा–अस्मादृश	
पश्चिम का–पाश्चात्य	तुम लोग जैसा–युष्मादृश	करता हुआ–कुर्वत्
उत्तर का–औत्तरेय	कैसा–कीदृश	पढ़ता हुआ–पठत्
दक्षिण का–दाक्षिणात्य	जैसा यादृश	देता हुआ–ददत्
बगल का–पार्श्वस्थ	वैसा–तादृश	जाने वाला–गमिष्यत्
नीचे का–अधस्तन,	ऐसा–ईदृश	जितना–यावत्
ऊपर का–उपरितन	दूसरा जैसा–अन्यादृश	उतना–तावत्
आज का–अद्यतन	मेरा–मदीय, मामकीन	कितना–कियत्
अगले कल का–श्वस्तन	हम लोगों का–अस्मदीय	इतना–इयत्, एतावत्
बीते कल का–ह्यस्तन	अस्माकीन	नकारान्त
परसों का–परश्वस्तन	तुम्हारा–त्वदीय,	गुणी–गुणिन् -नी
सदा का–सनातन	तावकीन	किस नाम का–किन्नामन्
पुराने समय का–प्राक्तन	तुम लोगों का–युष्मदीय	इस नामका–एतन्नामन्
,, ,, ,, प्राक्कालिक	युष्माकीन	जिस नाम का–यन्नामन्
इस समय का–साम्प्रतिक	आपका–भवदीय–भावत्क	उस नाम का–तन्नामन्
सब जगह का–सार्वत्रिक	इसका–एतदीय	सकारान्त
कहीं का–क्वाचित्क	उसका–तदीय	बड़ा भारी–गरीयस्
जो अकस्मात् हुआ हो–आकस्मिक	जिसका–यदीय	बहुत छोटा–लघीयस्
जहाँ का–यत्रत्य	दूसरे का–परकीय	बहुत पतला–तनीयस्
वहाँ का–तत्रत्य	अन्यदीय	बहुत मोटा–स्थवीयस्
कहाँ का–कुत्रत्य	अपना–आत्मीय	विद्वान्–विद्वस्
यहाँ का–अत्रत्य	स्वकीय, स्वीय	

तुलनार्थक विशेषण शब्द

प्रिय [प्यारा]	प्रियतर [अधिक प्यारा]	प्रियतम [सबसे अधिक प्यारा]
गुरु [भारी]	गुरुतर [अधिक भारी]	गुरुतम [सबसे अधिक भारी]
महत् [बड़ा]	महत्तर [अधिक बड़ा]	महत्तम [सबसे अधिक बड़ा]

ब्दों।

कारक सम्बन्धी कुछ आवश्यक ज्ञातव्य विषय

१. **इव योगे प्रथमा**—रामः इव सत्पुरुषः कः—राम के समान सत्पुरुष कौन है।
२. **उभयतः योगे द्वितीया**—राजमार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति—सड़क के दोनों ओर वृक्ष हैं।
३. **सर्वतः योगे द्वितीया**—दुर्गं सर्वतः सैनिकाः सन्ति—किले के सभी ओर सैनिक हैं।
४. **प्रति योगे द्वितीया**—बालकाः गृहं प्रति गच्छन्ति—बालक घर की ओर जाते हैं।
५. **अन्तरेण योगे द्वितीया**—भवन्तम् अन्तरेण मम कः सहायः—आपके बिना मेरा सहायक कौन?
६. **परितः, अभितः योगे द्वितीया**—ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति—गाँव के चारो ओर खेत हैं।
७. **विना योगे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी**—ज्ञानं विना, ज्ञानेन विना, ज्ञानाद् विना—ज्ञान के बिना।
८. **कालवाचिनि शब्दे द्वितीया, सप्तमी**—परीक्षा सर्वाणि दिनानि, **सर्वेषु दिनेषु वा अस्ति**—सभी दिन परीक्षा है।
९. **द्विकर्मकधातूनां गौणकर्मणि द्वितीया**—छात्रः गुरुं प्रश्नं पृच्छति—छात्र गुरु से प्रश्न पूछता है।
१०. **क्रिया विशेषणे द्वितीया**—मन्दं मन्दं गच्छति—**धीरे-धीरे जाता है।**
११. **सहयोगे तृतीया**—गोपालेन सह गावः गच्छन्ति—गोपाल के साथ गायें जाती है।
१२. **अलं योगे तृतीया**—अलं विवादेन—विवाद करने से कोई लाभ नहीं।
१३. **अङ्गविकारे तृतीया**—कर्णेन वधिरः—कान से बहरा। अक्ष्णा काणः—आँख से काना। पादेन खञ्जः—पैर से लँगड़ा।
१४. **प्रकृत्यादिबोधक शब्दयोगे तृतीया**—प्रकृत्या सरलः—स्वभाव से सरल।
१५. **पृथक् योगे तृतीया, द्वितीया, पञ्चमी**—रामेण रामं रामात् पृथक्, सीता न वसति—रामसे पृथक् सीता नहीं रहती है।
१६. **क्रोधाद्यर्थक-धातुयोगे चतुर्थी**—गुरुः शिष्याय क्रुध्यति—गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।
१७. **'दा' धातुयोगे चतुर्थी**—गुरुः शिष्याय पुस्तकं ददाति—गुरु शिष्य को पुस्तक देता है।
१८. **'रुच्' धातुयोगे चतुर्थी**—बालकेभ्यः मोदकं रोचते—बालकों को मिठाई अच्छी लगती है।
१९. **'नमः' योगे चतुर्थी**—देवेभ्यः नमः—देवताओं को नमस्कार, गुरवे नमः—गुरू को नमस्कार।
२०. **प्रभृति, आरभ्य, बहिः योगे पञ्चमी**—कश्मीरेभ्यः प्रभृति कन्याकुमारी पर्यन्तम्—कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक। दक्षिणात् प्रभृति—दक्षिण से लेकर।
दशवादनात् आरभ्य—दश बजे से लेकर। ग्रामात् बहिः—गाँव से बाहर।
२१. **ऋते योगे पञ्चमी**—ईश्वरात् ऋते कः सृष्टिकर्ता—ईश्वर के सिवाय कौन सृष्टिकर्ता है।
२२. **उत्पत्ति-हेतौ पञ्चमी**—वृक्षात् फलानि उत्पद्यन्ते—वृक्ष से फल पैदा होते हैं।
२३. **यस्मात् पठ्यते, श्रूयते वा, तत्र पञ्चमी**—छात्रः अध्यापकात् पठति—छात्र अध्यापक से पढ़ता है।
२४. **वारणार्थक-धातुयोगे पञ्चमी**—पापात् निवारयति—पाप से रोकता है।
२५. **भयहेतौ पञ्चमी**—बालकः सर्पाद् बिभेति—बालक सर्प से डरता है।
२६. **आङ् योगे पञ्चमी**—आमूलात् श्रोतुम् इच्छामि—मूल से सुनना चाहता हूँ।
२७. **उत्कर्षापकर्ष-बोधने पञ्चमी**—दुष्टात् सज्जनः श्रेष्ठः—दुष्ट से सज्जन श्रेष्ठ हैं।
२८. **कृत्य-प्रत्यय-प्रयोगे कर्तरि षष्ठी तृतीया च**—मया मम वा पठितव्यं पुस्तकम् इदम्—मुझे यह पुस्तक पढ़नी है।
२९. **क्रियया क्रियान्तर-प्रतीतौ सप्तमी**—धर्मे गते सति, सर्वं गतम्—धर्म के जाने पर सब कुछ गया
३०. **साधु-असाधु-प्रयोगे सप्तमी**—रावणः रामे असाधुः-रावण राम के प्रति असाधु है।
३१. **मार्ग-परिमाण-वाचक-शब्दैः प्रथमा द्वितीया तथा सप्तमी**—विद्यालयात् गृहम् एकः क्रोशः, एक क्रोशम्, एकस्मिन् क्रोशे अस्ति—विद्यालय से घर एक कोश है।

कुछ विशेष आवश्यक अव्यय और उनके अर्थ

जिन शब्दों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न हो उन्हें अव्यय कहते हैं।

१—**स्थानवाचक अव्यय**—**अत्र**-यहाँ, **तत्र**-वहाँ, **कुत्र**-कहाँ, **यत्र**-जहाँ, **कुत्रापि**-कहीं भी, **अन्यत्र**-दूसरी जगह, **सर्वत्र**-सब जगह, **उभयत्र**-दोनों जगह, **अत्रैव**-यहीं पर, **तत्रैव**-वहीं पर, **यत्रकुत्रापि**-जहाँ कहीं भी, **इतः**-यहाँ से, **ततः**-वहाँ से, **कुतः**-कहाँ से, **कुतश्चित्**-कहाँ से, **यतः**-जहाँ से, **इतस्ततः**-इधर उधर से, **सर्वतः**-सब ओर से, **उभयतः**-दोनों ओर से, **उपरि**-ऊपर, **अधः**-नीचे, **अग्रे**, **पुरः**,**पुरस्तात्**-आगे, **पश्चात्**-पीछे, **बहिः**-बाहर, **अन्तः**-भीतर, **उपर्यधः**-ऊपर नीचे।

२—**कालवाचक अव्यय**—**इदानीं, अधुना, सम्प्रति**-इस समय, **तदा, तदानीम्**-उस समय, **कदा**-कब, **यदा**-जब, **सदा, सर्वदा**-हमेशा, **एकदा**-एक समय, **कदाचित्**-कभी, **कदापि**-कभी भी, **यावत्**-जबतक, **तावत्**-तब तक, **सद्यः**-तत्काल, **पुनः**-फिर, **अद्य**-आज, **अद्यैव**-आज ही, **अद्यापि**-आज भी, **श्वः**-कल, **ह्यः**-बीता कल, **परश्वः**-परसों, **शीघ्रम्**-जल्दी, **शनैः शनैः**-धीरे-धीरे, **पुनः पुनः**-बार-बार, **युगपत्**-एक समय, **सकृत्**-एक बार, **पुरा प्राक्**-पहले, **पश्चात्**-पीछे, **प्रातः**-सबेरे, **सायम्**-शाम को, **अथ, अनन्तरम्**-इसके बाद, **कियत्कालम्**-कब तक, **एतावत्कालम्**-अब तक।

३—**प्रकारवाचक अव्यय**—**कथम्**-कैसे, **इत्थम्, एवम्**-ऐसे, **यथा**-जैसे, **तथा**-वैसे, **सर्वथा**-सब तरह से, **अन्यथा**-नहीं तो, **कथञ्चित्, कथमपि**-किसी प्रकार, **यथा-यथा**-जैसे-जैसे, **तथा-तथा**-वैसे-वैसे, **यथाकथञ्चित्**-जिस किसी प्रकार, **कथंकथमपि**-किसी-किसी प्रकार, **तथैव**-उसी प्रकार, **बहुधा, प्रायः**-अक्सर, **मिथः**-आपस में, **अवश्यम्**-जरूर, **स्वयम्**-खुद, **वस्तुतः**-असल में, **कदाचित्**-सायद, **सम्यक्**-अच्छी तरह, **सहसा, अकस्मात्**-अचानक, **वृथा, मुधा**-व्यर्थ, **समक्षम्**-सामने, **मन्दम्**-धीरे।

४—**समुच्चयवाचक अव्यय**—**च, तथा**-और, **अपि**-भी, **वा अथवा**-या, **किम्**-क्या, **प्रत्युत**-बल्कि, **परन्तु**-लेकिन, **अतः**-इसलिये, **अतएव**-इसीलिये, **यतः**-चूँकि, **यत्**-कि, **यदि**-अगर, **यद्यपि**-अगर्चे, **तथापि**-तो भी, **हि**-क्योंकि।

५—**सम्बन्धवाचक अव्यय**—विना-विना, **ऋते**-सिवाय, **द्वारा**-द्वारा, **कृते**-लिये, **सह**-साथ, **प्रभृति**-लेकर, **पर्यन्तम्**-तक।

६—**परिमाणवाचक अव्यय**—**यावत्**-जितना, **तावत्**-उतना, **इयत्**-इतना, **कियत्**-कितना, **ईषत्**-थोड़ा, **मनाक्**-थोड़ा।

७—**निषेधवाचक अव्यय**—ने, नो, नहि-नहीं, मा-मत, अलम्-बस।

८—**स्वीकारवाचक अव्यय**—**आम्, ओम्**-हाँ, **बाढम्**-बहुत अच्छा, **अथकिम्**-और क्या?

नवम आवृति-२०००

मूल्य : 16.60 रुपये मात्र